विक्रम संवाद

पाक्षिक आलेख सेवा/नि:शुल्क वितरण के लिए

सम्पादक

महाराजा विक्रमादित्य शोध पीठ

1, उदयन मार्ग, उज्जैन-456010

फोन : 0734-2521499, 0755-2660407

e-mail : mvspujjain@gmail.com

vikramadityashodhpeeth@gmail.com

इस अंक में

पृष्ठ क्र. 1-3

विक्रमादित्य के नव रत्नों की रोचक कथा

डॉ. प्रीति पांडे

पृष्ठ क्र. 4-5

पुष्पक सहित पच्चीस विमानों का ऐतिहासिक संदर्भ

प्रमोद भार्गव

पृष्ठ क्र. 6

कालका हँसी क्यों, सरस्वती रोई क्यों

डॉ. पूरन सहगल

पृष्ठ क्र. 7-8

पुस्तक चर्चा

भारत वर्षीय प्राचीन चरित्र कोश

डॉ. मंजू तिवारी

विक्रमादित्य के नव रत्नों की रोचक कथा

डॉ. प्रीति पांडे

संवत् प्रवर्तक विक्रमादित्य के नवरत्नभी अपने आप में एक विकसित विषय रहे हैं क्योंकि इन नवरत्नों की समकालिकता, इनके अविर्भाव सभी तथ्यों पर प्रश्न उठाये जाते रहे हैं। नवरत्नों की समस्या को हल करने का आशय है एक साथ नौ लोगों के व्यक्तित्व कृत्तित्व एवं दसवें सम्राट विक्रमादित्य से उनके सम्बन्धों पर प्रकाश डालना है। यह कार्य जितना कठिन है उतना ही रूचिकर क्योंकि प्रथम शताब्दी ई. के महान विद्वानों एवं उनकी रचनाओं का परिचय प्राप्त करना अपने आप में रोमांचकारी अनुभव होगा। इसी उद्देश्य से कि इन सभी नवरत्नों को नवीन साक्ष्यों के प्रकाश में देखना एवं दिखाना तथा संवत् प्रवर्तक विक्रमादित्य के नवरत्नों की परम्परा का उदय एवं उसकी परम्परा की निरंतरता को प्राप्त करना आवश्यक प्रतीत होता है। यह देखने का प्रयास किया जाएगा कि नवरत्नों में नौ की ही संख्या का क्या उद्देश्य है? क्या विक्रमादित्य की सभा में नौ ही विद्वान थे अथवा अधिक। यदि हाँ तो वे इस पद से क्यों वंचित थे। निश्चित रूप से नवरत्नों की स्थापना का उद्देश्य विशिष्ट विद्वानों को राजकीय संरक्षण देना था जिससे वे और अधिक अनुसंधान कर सकें और अपने ज्ञान द्वारा प्रशासनिक सहयोग भी दें।

अभी तक हुए ऐतिहासिक अनुसंधानों में यह स्पष्ट हो चुका है कि शकों को परास्त कर विक्रमादित्य ने संवत् प्रवर्तन किया तदनन्तर राज्य में आंतरिक और बाह्य सुरक्षा एवं विश्वास का वातावरण उत्पन्न हुआ। इस अनुकूल वातावरण ने सभी को चतुर्दिक विकास के लिये प्रोत्साहन मिला। स्वाभविक प्रेम के कारण विक्रमादित्य ने कई विद्वानों को परीक्षा आयोजित करके एवं ऐसे ही आमंत्रित किया और उनमें से श्रेष्ठ नौ को विभिन्न विशेषज्ञताओं के आधार पर 'नवरत्न' के सम्मान से विभूषित किया।

महाराजा विक्रमादित्य ने नवरत्नों की संख्या ही क्यों रखी, इस तथ्य पर विद्वानों को सदा ही कौतूहल रहा है और संभावित अटकलें लगाई जाती रही हैं। कुछ लोगों का तर्क है कि 9, 7, 11 प्राय: विषम संख्याओं को ही अधिष्ठित किया जाता है अत: इनमें से 9 का चयन करके विक्रमादित्य ने नौ का अंक लिया होगा। वहीं कुछ विद्वान यह मानते हैं कि नौ का अंक नवग्रहों के आधार पर लिया होगा। उनके अनुसार जिस प्रकार सूर्य के चारों ओर नौ ग्रह परिक्रमा करते हैं एवं सूर्य की शोभा को बढ़ाते हैं उसी प्रकार नवरत्न नवग्रहों के आधार पर सूर्य रूपी विक्रमादित्य की शोभा को बहुगुणित करते होंगे। निश्चित रूप से यही परिकल्पना अधिक तर्क संगत लगती है। इन नवरत्नों के साथ मिलकर विक्रमादित्य ने अपने राज्य का सांस्कृतिक, वैज्ञानिक आदि चतुर्दिक विकास किया।

नवरत्नों के अतिरिक्त भी विक्रमादित्य के दरबार में विद्वानों का विशाल समूह था। विक्रमादित्य

कवियों और विद्वानों को अतिसमृद्ध आश्रय एवं पुरस्कारादि देता था। विक्रमादित्य की सभा में गुणों की परख करके विद्वानों को सम्मान देने सम्बन्धी कई उदाहरण मिलते हैं–

बाणपूर्वकालिक हालसंग्रहित गाथा सप्तशती के अनुसार –

''संवाहणसुहरसतोसिएण देन्तेण तुह करके लक्खम्।
चलणेण विक्कमाइत्तचरिअं अणुसिक्खिअं तिस्सा।।

इसी प्रकार बाणपूर्वकालिक सुबन्धुरचित वासवदत्ता का प्रसिद्ध श्लोक है–

सा रसवंत्ता विहता नवका विलसन्ति चरति नो कंकः।
सरसीव कीर्तिशेषं गतवति भुवि विक्रमादित्ये।।

ई.स. 1050 से पूर्व विरचित सोढलकी उदय सुन्दरी कथा में भी श्लोक है–

श्रीविक्रमो नृपतिरत्र पतिः सभानामासीत्स
कोऽप्यसदृशः कविमित्रनामा।
यो वार्थमात्रमुदितः कृतिनां गृहेषु
दत्वा चकार करटीन्दुघटान्धकारम्।।

ई.सं. 1363 में संग्रहित शार्ङ्गंधरपद्धति के अनुसार–

तत्कृतं यन्न केनापि तद्दत्वं यन्न केनचित्।
तत्साधितमसाध्यं यद्विक्रमार्केण भूभुजा।।

क्षेमेन्द्र ने उन रत्नों का स्पष्ट उल्लेख किया है–

विक्रमादित्यदेवश्च् रत्नानां भाजनं विदुः।

इसी प्रकार बोधगया के 948 ई. के शिलालेख में विक्रमादित्य के 'नवरत्नानि' में अमरदेव (अमर सिंह) की प्रशंसा की गयी है।

इस प्रकार हम पाते हैं कि विक्रमादित्य के नवरत्नों की चर्चा कई स्थानों में और कई कालों में भिन्न- भिन्न परिप्रेक्ष्यों में की गई है। यदि उनके अस्तित्व में किस भी प्रकार का संदेह होता तो यह परम्परा में आगे न बढ़ता। न केवल शिष्ट साहित्य में वरन् लोककथानकों में भी नवरत्नों में से कई की चर्चा आई है। अमरसिंह, वररूचि, कालिदास एवं बेताल भट्ट वे नवरत्न हैं जिन्हें लोक अनुश्रुतियों एवं कथानकों में बार-बार याद किया जाता रहा है। न केवल नवरत्नों वरन् विभिन्न अन्य विद्वान भी स्मरण किये जाते रहे हैं। ज्योतिर्विदाभरण आदि ग्रंथों में बादरायण, मणित्थ, कुमारसिंह, विष्णु, त्रिलोचन, हरि, मणि, अंगुदत्त, सुबन्धु, हरि, मूलदेव आदि महान विद्वानों को समय-समय पर याद किया जाता रहा है। निश्चित रूप से ये सभी विक्रमादित्य के समय के महान विद्वान रहे हैं।

संवत् प्रवर्तक विक्रमादित्य भारत की कोटि-कोटि जनता में शताब्दियों से लोकप्रिय एवं श्रृद्धा के पात्र उज्जयिनी के महान जननायक विक्रमादित्य की ऐतिहासिकता को संदिग्ध बनाने का प्रयास किया जाता रहा है। किन्तु सत्यता अब सबके समक्ष आ गई है और यह स्पष्ट हो गया है कि विक्रमादित्य ने शकों को परास्त करके उज्जयिनी को हस्तगत किया एवं संवत् का प्रवर्तन किया। जो कि पहले कृत संवत् फिर मालव संवत् एवं अन्ततोगत्वा विक्रम संवत् कहलाया। उसने एक समृद्ध एवं खुशहाल राज्य की नींव डाली। वे एक न्यायप्रिय, प्रजावत्सल, वीर, धर्मात्मा तथा विद्वानों के संरक्षक थे। उनकी शालीनता, मनुष्यता, वाग्मिता, बुद्धिमत्ता, विविध और विभिन्न अनन्त विचित्रताओं के चर्चे आज भी घर-घर में मिलते हैं।

उनके यहाँ लोक विश्रुत बृहस्पति के समान कई विद्वान थे। अनेक प्रवर आचार्य थे। ऐसे भी महामहिम उद्भट विद्वान थे जो कि सरस्वती के वरदपुत्र एवं कण्ठाभरण कहे जाते थे। इनमें भी उनके अन्यतम् विशेषज्ञ कलाकार

विक्रमादित्य ने शकों को परास्त करके उज्जयिनी को हस्तगत किया एवं संवत् का प्रवर्तन किया। जो कि पहले कृत संवत् फिर मालव संवत् एवं अन्ततोगत्वा विक्रम संवत् कहलाया। उसने एक समृद्ध एवं खुशहाल राज्य की नींव डाली। वे एक न्यायप्रिय, प्रजावत्सल, वीर, धर्मात्मा तथा विद्वानों के संरक्षक थे। उनकी शालीनता, मनुष्यता, वाग्मिता, बुद्धिमत्ता, विविध और विभिन्न अनन्त विचित्रताओं के चर्चे आज भी घर-घर में मिलते हैं। उनके यहाँ लोक विश्रुत बृहस्पति के समान कई विद्वान थे। अनेक प्रवर आचार्य थे। ऐसे भी महामहिम उद्भर विद्वान थे जो कि सरस्वती के वरदपुत्र एवं कण्ठाभरण कहे जाते थे। इनमें भी उनके अन्यतम् विशेषज्ञ कलाकार और राज्य व्यावस्थापक तो उस समय के सूर्य-चन्द्र ही थे। इन सबमें नवरत्न तो भूतल के अजर अमर रत्न थे। जिन्होंने विद्वता के नये परिमाण उपस्थित किये थे।

और राज्य व्यवस्थापक तो उस समय के सूर्य-चन्द्र ही थे। इन सबमें नवरत्न तो भूतल के अजर अमर रत्न थे। जिन्होंने विद्वता के नये परिमाण उपस्थित किये थे।

विक्रमादित्य ने एक समृद्ध साम्राज्य की नींव डाली थी कालिदास के ग्रंथों से यह स्पष्ट होता है कि उनके समय का समाज पूर्ण सम्पन्न था, गुरुकुल प्रणाली का प्रचार था, ललित कथाओं का समधिक समादर था, शिक्षित स्त्री-पुरुष संस्कृत बोलते थे और शिष्टाचार का मूल्य था, देश धन-धान्य सम्पन्न था, व्यापार उन्नति पर था, यन्त्र विद्या की अच्छी दशा थी, खनिज पदार्थों की अभिवृद्धि का ख्याल था और गृहोपयोगी शिल्प का मान था, राजा का योग्य होना अनिवार्य था।

यह भी कहा जाता है कि उस समय का भारत प्रत्येक दृष्टि से समुन्नत था। सभी इसके गुणगान करते। संसार के लोग विक्रम के व्यक्तित्व, नवरत्नों और भारतीय समुत्कर्षों के प्रभावों से प्रभावित: प्राय: भारत दर्शनार्थ आया करते थे। तत्कालीन भारतीय राज-समाज विक्रम से प्रभावित था। कालांतर में ये प्रभाव इतना अधिक बढ़ गया कि शासकों ने गुर्ण, कर्म, क्रियाकलाप, उपाधि एवं यहां तक कि नवरत्नों की परम्परा को **अपनाना प्रारंभ कर दिया। इसी कारण आज भारतीय इतिहास और जनश्रुतियों में हमें विक्रम-पदवीधारी राजा और सम्राट** पर्याप्त संख्या में मिलते हैं। उनमें मुख्य श्रावस्ती का विक्रमादित्य, कश्मीर का विक्रमादित्य, मेवाड़ का विक्रमादित्य और बंगाल का विक्रमादित्य है। इसके अतिरिक्त चालुक्य वंशों में भी पाँच विक्रम उपाधिधारी राजा हुये हैं। साथ ही दक्षिणापथ के गुत्तलनामी सामन्त राजा में भी विक्रम पदवीधारी तीन राजा हुये हैं। दक्षिणात्यवाण राजवंश में भी प्रभुमेरूदेवपुत्र विजयबाहु एक विक्रम पदवीधारी राजा हुआ है। इसी प्रकार उज्जैन के भी मूल विक्रमादित्य के सिवा भी विक्रम पदवीधारी दो एक राजा हुये हैं। इन्हीं में एक हर्ष विक्रमादित्य भी था। इसके अतिरिक्त गुप्तवंशी चन्द्रगुप्त द्वितीय ने भी विक्रमादित्य की उपाधि धारण कर उस मूल विक्रमादित्य की महानता के पुर्नस्थापित किया।

इस प्रकार के सौहर्द्रपूर्ण, यशस्वी साम्राज्य में विक्रमादित्य ने नवरत्नों की संकल्पना को जन्म दिया जिसका उद्देश्य जनता के भौतिक सुख के साथ-साथ उसके बौद्धिक विकास भी था। इस परम्परा को बनाने हेतु उसने परीक्षाओं आयोजन किया एवं सतर्कता से इन रत्नों का चुनाव किया। पुनश्च इन रत्नों के अतिरिक्त भी अन्य विद्वानों को सम्मान आदि दिया जिससे वे भी दरबार की शोभा बने। इस प्रकार विक्रमादित्य ने कई विद्वानों को आश्रय देकर ज्ञान-विज्ञान का संवर्धन किया।

नवरत्नों की परम्परा आगे भी देखने में आती है। हम देखते हैं कि प्राचीनकाल एवं मध्यकाल के कई शासकों ने भले ही नवरत्नों के आधार पर विद्वानों की कोई संख्या निश्चित न की हो किन्तु विद्वानों को प्रश्रय देने का उनका कार्य विक्रमादित्य से प्रेरित अवश्य था। हर्षचरित के काल में बाणभट्ट आदि थे। श्रुतधर जो राजा लक्ष्मणसेन (वि.सं. 1173) का सभापण्डित था उसका उपनाम धोयी था, लिखता है -

ख्यातो यश्च श्रुतिधरतया विक्रमादित्यगोष्ठी विद्याभर्त्तु:
खलु वररुचेराससाद प्रतिष्ठाम्।

श्रुतधर ने अर्थात लक्ष्मणसेन की सभा में वही प्रतिष्ठा प्राप्त की जो विक्रमादित्य की सभा में वररूचि को प्राप्त थी। **इससे यह स्पष्ट होता है कि नवरत्नों का चमत्कारिक वैभव एवं महात्म्य का वर्णन एवं उसके समकक्ष होना अत्यन्त सम्मान का** सूचक समझा जाता था। यह वैभव कई सदियों तक बना रहा। **कई शास्त्रों ने संवत् प्रवर्तक की भांति विद्वानों को आश्रय एवं प्रोत्साहन दिया किन्तु एक भी ऐसा शासक नहीं हुआ जिसने नौ** की जैसी बड़ी संख्या अथवा विक्रमादित्य के दरबार जैसे विशाल विद्वानों की संख्या को बना रखा हो। निश्चित रूप से यह एक विचारणीय प्रश्न है।

लेखकों से निवेदन

महाराज विक्रमादित्य शोध पीठ का नवीन प्रकल्प '**विक्रम संवाद**' पाक्षिक आलेख सेवा है। विभिन्न प्रकाशन-प्रसारण माध्यमों को नि:शुल्क प्रेषित किया जाता है। इस आलेख सेवा का उद्देश्य प्रमाणिक एवं अज्ञात तथ्यों से पाठकों का परिचय कराना है. आपके पास ऐसी कोई सामग्री हो तो कृपया हमें भेजें।

-संपादक

विक्रम संवाद

पुष्पक सहित पच्चीस विमानों का ऐतिहासिक संदर्भ

प्रमोद भार्गव

अयोध्या में राम मंदिर निर्माण के साथ राम की पुरातन एवं सनातन ऐतिहासिकता के साथ-साथ सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की स्थापना भी हो जाएगी। अब विभिन्न रामायणों में दर्ज उस विज्ञान की वैज्ञानिकताओं को भी मान्यता देने की जरूरत है, जिन्हें पूर्वाग्रहों के चलते वैज्ञानिक एवं बुद्धिजीवी न केवल नकारते रहे हैं, बल्कि इनकी ऐतिहासिकता को भी कपोल-कल्पित कहकर उपहास उड़ाते रहे हैं। अतएव यह समय प्राचीन भारतीय विज्ञान के पुनरुत्थान का समय भी है। क्योंकि रामायण और महाभारत कथाएं नाना लोक स्मृतियों और विविध आयामों में प्रचलित बनी रहकर वर्तमान हैं। इनका विस्तार भी सार्वभौमिक है। भवभूति और कालिदास ने रामायण को इतिहास बताया। बाल्मीकि रामायण और उसके समकालीन ग्रंथों में 'इतिहास' को 'पुरावृत्त' कहा गया है। गोया, कालिदास के 'रघुवंश' में विश्वामित्र राम को पुरावृत्त सुनाते हैं। मार्क्सवादी चिंतक डॉ. रामविलास शर्मा ने रामायण को महाकाव्यात्मक इतिहास की श्रेणी में रखा है। इन ग्रंथों में विज्ञानसम्मत अनेक ऐसे सूत्र व स्रोत मौजूद हैं, जिनके जरिए नए आविष्कार की दिशा में बढ़ा जा सकता है।

इतिहास तथ्य और घटनाओं के साथ मानव की विकास यात्रा की खोज भी है। यह तय है कि मानव, अपने विकास के अनुक्रम में ही वैज्ञानिक अनुसंधानों से सायास-अनायास जुड़ता रहा है। ये वैज्ञानिक उपलब्धियां या आविष्कार रामायण, महाभारत काल में उसी तरह चरमोत्कर्ष पर थीं, जिस तरह ऋग्वेद के लेखन-संपादन काल के समय संस्कृत भाषायी विकास के शिखर पर थी। रामायण का शब्दार्थ भी राम का 'अयण' अर्थात 'भ्रमण' से है। वे तीन सौ रामायण और अनेक रामायण विषयक संदर्भ ग्रंथ, जिनके प्रभाव को नकारने के लिए पाउला रिचमैन ने 1942 में 'मैनी रामायणस द डाइवर्सिटी ऑफ ए नैरेटिव ट्रेडिशन इन साउथ एशिया' लिखी और ए के रामानुजन ने 'थ्री हंड्रेड रामायण फाइव एग्जांपल एंड थ्री थॉट्स ऑन ट्रांसलेशन' निबंध लिख कर कामजन्य विद्रुप अंशों का संकलन किया। इन्हीं रामायणों, रामायण विषयक संदर्भ ग्रंथों और मदनमोहन शर्मा शाही के वृहद् उपन्यास से विज्ञान सम्मत आविष्कारों की पड़ताल की जा सकती है। रामायण एकांगी दृष्टिकोण का वृतांत नहीं है। इसमें कौटुम्बिक सांसारिकता है। राज-समाज संचालन के कूट मंत्र हैं। भूगोल है। वनस्पति और जीव जगत हैं। राष्ट्रीयता है। राष्ट्र के प्रति उत्सर्ग का चरम है। अस्त्र-शस्त्र हैं। यौद्धिक कौशल के गुण हैं। भौतिकवाद है। कणांद का परमाणुवाद है। सांख्यदर्शन और योग के सूत्र हैं। वेदांत दर्शन है और अनेक वैज्ञानिक उपलब्धियां हैं। गांधी का राम-राज्य और पं. दीनदयाल उपाध्याय के आध्यात्मिक भौतिकवाद के उत्स इन्हीं रामायण में हैं। जर्मन विद्वान मैक्समूलर ने तो ऋग्वेद को अपने युग का 'विश्व कोश' कहा है। मसलन 'एन-साइक्लोपीडिया ऑफ वर्ल्ड'!

लंकाधीश रावण ने नाना प्रकार की विधाओं के पल्लवन की दृष्टि से यथोचित धन व सुविधाएं उपलब्ध कराई थीं। रावण के पास लडाकू वायुयानों और समुद्री जलपोतों के बड़े भण्डार थे। प्रक्षेपास्त्र और ब्रह्मास्त्रों का अकूत भण्डार व उनके निर्माण में लगी अनेक वेधशालाएं थीं। दूरसंचार व दूरदर्शन की तकनीकी-यंत्र लंका में स्थापित थे। राम-रावण युद्ध केवल राम और रावण के बीच न होकर एक विश्वयुद्ध था। जिसमें उस समय की समस्त विश्व-शक्तियों ने अपने-अपने मित्र देश के लिए लड़ाई लड़ी थी। परिणामस्वरूप ब्रह्मास्त्रों के विकट प्रयोग से लगभग समस्त वैज्ञानिक अनुसंधान-शालाएं उनके आविष्कारक, वैज्ञानिक व अध्येता काल-कवलित हो गए। यही कारण है कि हम कालांतर में हुए महाभारत युद्ध में भी वैज्ञानिक चमत्कारों को रामायण की तुलना में उत्कृष्ट व सक्षम नहीं पाते हैं। यह भी इतना विकराल विश्व-युद्ध था कि रामायण काल से शेष बचा जो विज्ञान था, वह महाभारत युद्ध के विध्वंस की लपेट में आकर नष्ट हो गया। इसीलिए महाभारत के बाद के जितने भी युद्ध हैं, वे खतरनाक अस्त्र-शस्त्रों से न लड़े जाकर थल सेना के माध्यम से ही लड़े गए दिखाई देते हैं। बीसवीं सदी में हुए द्वितीय विश्व युद्ध में जरूर हवाई हमले के माध्यम से अमेरिका ने जापान के हिरोशिमा-नागाशाकी में परमाणु हमले किए।

वाल्मीकि रामायण एवं नाना रामायणों तथा अन्य ग्रंथों में 'पुष्पक विमान' के उपयोग के विवरण हैं। इससे स्पष्ट होता है, उस युग में राक्षस व देवता न केवल विमान शास्त्र के ज्ञाता थे, बल्कि सुविधायुक्त आकाशगामी साधनों के रूप में वाहन उपलब्ध भी थे। रामायण के अनुसार पुष्पक विमान के निर्माता ब्रह्मा थे। ब्रह्मा ने यह विमान कुबेर को भेंट किया था। कुबेर से इसे रावण ने छीन लिया। रावण की मृत्यु के बाद विभीषण इसका अधिपति बना और उसने फिर से इसे कुबेर को दे दिया। कुबेर ने इसे राम को उपहार में दे दिया। लंका विजय के बाद राम इसी विमान से अयोध्या पहुंचे थे।

रामायण में दर्ज उल्लेख के अनुसार पुष्पक विमान मोर जैसी आकृति का आकाशचारी विमान था, जो अग्नि-वायु की समन्वयी ऊर्जा से चलता था। इसकी गति तीव्र थी और चालक की इच्छानुसार इसे किसी भी दिशा में गतिशील रखा जा सकता था। इसे छोटा-बड़ा भी किया जा सकता था। यह सभी ऋतुओं में आरामदायक यानी वातानुकूलित था। इसमें स्वर्ण खंभ, मणिनिर्मित दरवाजे, मणि-स्वर्णमय सीढ़ियां, वेदियां (आसन) गुप्तगृह, अट्टालिकाएं (केबिन) तथा नीलम से निर्मित सिंहासन (कुर्सियां) थे। अनेक प्रकार के चित्र एवं जालियों से यह सुसज्जित था। यह दिन और रात दोनों समय गतिमान रहने में समर्थ था। इस विवरण से जाहिर है कि यह उन्नत प्रौद्योगिकी और वास्तुकला का अनूठा नमूना था।

'ऋग्वेद' में भी चार तरह के विमानों का उल्लेख है। जिन्हें

आर्य-अनार्य उपयोग में लाते थे। इन चार वायुयानों को शकुन, त्रिपुर, सुन्दर और रुक्म नामों से जाना जाता था। ये अश्वहीन, चालक रहित , तीव्रगामी और धूल के बादल उड़ाते हुए आकाश में उड़ते थे। इनकी गति पतंग (पक्षी) की भांति, क्षमता तीन दिन-रात लगातार उड़ते रहने की और आकृति नौका जैसी थी। त्रिपुर विमान तो तीन खण्डों (तल्लों) वाला था तथा जल, थल एवं नभ तीनों में विचरण कर सकता था। रामायण में ही वर्णित हनुमान की आकाश-यात्राएं, महाभारत में देवराज इन्द्र का दिव्य-रथ, कार्त्तवीर्य अर्जुन का स्वर्ण विमान एवं सोम-विमान, पुराणों में वर्णित नारदादि की आकाश यात्राएं एवं विभिन्न देवी-देवताओं के आकाशगामी वाहन रामायण-महाभारत काल में वायुयान और हैलीकॉप्टर जैसे यांत्रिक साधनों की उपलब्धि के प्रमाण हैं।

किंवदंती तो यह भी है कि गौतम बुद्ध ने भी वायुयान द्वारा तीन बार लंका की यात्रा की थी। एरिक फॉन डॉनिकेन की किताब 'चैरियट्स ऑफ गॉड्स' में तो भारत समेत कई प्राचीन देशों से प्रमाण एकत्रित करके वायुयानों की तत्कालीन उपस्थिति की पुष्टि की गई है। इसी प्रकार डॉ. ओंकारनाथ श्रीवास्तव ने अनेक पाश्चात्य अनुसंधानों के मतों के आधार पर संभावना जताई है कि 'रामायण' में अंकित हनुमान की यात्राएं वायुयान अथवा हैलीकॉप्टर की यात्राएं थीं या हनुमान 'राकेट बेल्ट' बांधकर आकाशगमन करते थे, जैसा कि आज के अंतरिक्ष-यात्री करते हैं। हनुमान-मेघनाद में परस्पर हुआ वायु-युद्ध भी हावरक्रॉफ्ट से मिलता-जुलता है। आज भी लंका की पहाड़ियों पर चैरस मैदान पाए जाते हैं, जो शायद उस कालखंड के वैमानिक अड्डे थे। प्राचीन देशों के ग्रंथों में वर्णित उड़ान-यंत्रों के वर्णन लगभग एक जैसे हैं। कुछ गुफा-चित्रों में आकाशचारी मानव एवं अंतरिक्ष वेशभूषा से युक्त व्यक्तियों के चित्र भी निर्मित हैं। मिस्र में तो दुनिया का ऐसा नक्शा मिला है, जिसका निर्माण आकाश में उड़ान-सुविधा की पुष्टि करता है। इन सब साक्ष्यों से प्रमाणित होता है कि पुष्पक व अन्य विमानों के रामायण में वर्णन कोई कवि-कल्पना की कोरी उड़ान नहीं है। ताजा वैज्ञानिक अनुसंधानों ने भी तय किया है कि रामायण काल में वैमानिकी प्रौद्योगिकी इतनी अधिक विकसित थी, जिसे आज समझ पाना भी कठिन है। रावण का ससुर मयासुर अथवा मयदानव ने भगवान विश्वकर्मा (ब्रह्मा) से वैमानिकी विद्या सीखी और पुष्पक विमान बनाया। जिसे कुबेर ने हासिल कर लिया। पुष्पक विमान की प्रौद्योगिक का विस्तृत ब्यौरा महर्षि भारद्वाज द्वारा लिखित पुस्तक 'यंत्र-सर्वेश्वम्' में भी किया गया था। वर्तमान में विलुप्त हो चुकी इस पुस्तक के 40 अध्यायों में से एक अध्याय 'वैमानिक शास्त्र' अभी उपलब्ध है। इसमें भी शकुन, सुन्दर, त्रिपुर एवं रुक्म विमान सहित 25 तरह के विमानों का विवरण है। इसी पुस्तक में वर्णित कुछ शब्द जैसे 'विश्व क्रिया दर्पण' आज के रडार जैसे यंत्र की कार्यप्रणाली का रूपक है।

नए शोध से पता चला है कि पुष्पक विमान एक ऐसा चमत्कारिक यात्री विमान था, जिसमें चाहे जितने भी यात्री सवार हो जाएं, एक कुर्सी हमेशा रिक्त रहती थी। यही नहीं यह विमान यात्रियों की संख्या और वायु के घनत्व के हिसाब से स्वमेव अपना आकार छोटा या बड़ा कर सकता था। इस तथ्य के पीछे वैज्ञानिकों का यह तर्क है कि वर्तमान समय में हम पदार्थ को जड़ मानते हैं, लेकिन हम पदार्थ की चेतना को जागृत कर लें तो उसमें भी संवेदना सृजित हो सकती है। रामायण काल में विज्ञान ने पदार्थ की इस चेतना को संभवत: जागृत कर लिया था, इसी कारण पुष्पक विमान स्व-संवेदना से क्रियाशील होकर आवश्यकता के अनुसार आकार परिवर्तित कर लेने की विलक्षणता रखता था। तकनीकी दृष्टि से पुष्पक में इतनी खूबियां थीं, जो वर्तमान विमानों में नहीं हैं। ताजा शोध से पता चला है कि यदि उस युग का पुष्पक या अन्य विमान आज आकाश गमन कर लें तो उनके विद्युत चुंबकीय प्रभाव से मौजूदा विद्युत व संचार जैसी व्यवस्थाएं ध्वस्त हो जाएंगी। पुष्पक विमान के बारे में यह भी पता चला है कि वह उसी व्यक्ति से संचालित होता था, जिसने विमान संचालन से संबंधित मंत्र सिद्ध किया हो, मसलन जिसके हाथ में विमान को संचालित करने वाला रिमोट हो। शोधकर्ता भी इसे कंपन तकनीक (वाइब्रेशन टेक्नॉलॉजी) से जोड़ कर देख रहे हैं। पुष्पक की एक विलक्षणता यह भी थी कि वह केवल एक स्थान से दूसरे स्थान तक ही उड़ान नहीं भरता था, बल्कि एक ग्रह से दूसरे ग्रह तक आवागमन में भी सक्षम था। यानी यह अंतरिक्षयान की क्षमताओं से भी युक्त था। विमानों के निर्माण, इनके प्रकार और इनके संचालन का सम्पूर्ण विवरण महार्षि भारद्वाज लिखित 'वैमानिक शास्त्र' में है। यह ग्रंथ उनके प्रमुख ग्रंथ 'यंत्र-सर्वेश्वम्' का एक भाग है। इसके अतिरक्त भारद्वाज ने 'अंशु-बोधिनी' नामक ग्रंथ भी लिखा है, जिसमें 'ब्रह्मांड विज्ञान' (कॉस्मोलॉजी) का वर्णन है। इसी ज्ञान से निर्मित व परिचालित होने के कारण विमान विभिन्न ग्रहों की उड़ान भरते थे। वैमानिक-शास्त्र में आठ अध्याय, एक सौ अधिकरण (सेक्शंस) पांच सौ सूत्र (सिद्धांत) और तीन हजार श्लोक हैं। इस ग्रंथ की भाषा वैदिक संस्कृत है।

वैमानिक-शास्त्र में चार प्रकार के विमानों का वर्णन है। ये काल के आधार पर विभाजित हैं। इन्हें तीन श्रेणियों में रखा गया है। इसमें 'मंत्रिका' श्रेणी में वे विमान आते हैं, जो सतयुग और त्रेतायुग में मंत्र और सिद्धियों से संचालित व नियंत्रित होते थे। दूसरी श्रेणी 'तांत्रिका' है, जिसमें तंत्र शक्ति से उड़ने वाले विमानों का ब्यौरा है। इसमें तीसरी श्रेणी में कलयुग में उड़ने वाले विमानों का ब्यौरा भी है, जो इंजन (यंत्र) की ताकत से उड़ान भरते हैं। यानी भारद्वाज ऋषि ने भविष्य की उड़ान प्रौद्योगिकी क्या होगी, इसका अनुमान भी अपनी दूरदृष्टि से लगा लिया था। इन्हें कृतक विमान कहा गया है। कुल 25 प्रकार के विमानों का इसमें वर्णन है। तांत्रिक विमानों में 'भैरव' और 'नंदक' समेत 56 प्रकार के विमानों का उल्लेख है। कृतक विमानों में 'शकुन', 'सुन्दर' और 'रुक्म' सहित 25 प्रकार के विमान दर्ज हैं। 'रुक्म' विमान में लोहे पर सोने का पानी चढ़ा होने का प्रयोग भी दिखाया गया है। 'त्रिपुर' विमान ऐसा है, जो जल, थल और नभ में तैर, दौड़ व उड़ सकता है।

कालका हँसी क्यों, सरस्वती रोई क्यों

डॉ. पूरन सहगल

लोक में अनेक जनश्रुतियाँ, किंवदंतियाँ, लोक कथाएँ और कहावतें कंठानुकंठ चर्चित बनी हुई हैं जो आस्था और विश्वास के दिव्यपुरुष राजा भोज की यशोगाथा बखानती थकती नहीं। उनका जीवन सरस्वती माता को समर्पित था। वे उनकी वरदात्री माता थीं। उनकी आराध्य देवी थीं। राजा भोज के इसी संदर्भ में एक समस्या पूर्ति बहुत प्रसिद्ध है। इसे पारसी (पहेली) भी कहा जाता है। कारका हरसी क्यूँ, सरसवताँ रोई क्यूँ। धार में दोनों माताओं की एक जैसी सत्ता। एक जैसा महत्व एवं वर्चस्व फिर कालका को हर्षित होने और सरस्वती को रोने का कौन सा कारण बना? यह पारसी कहकर वयोवृद्ध नारायणजी सेन अपनी सफेद लम्बी दाढ़ी में मंद-मंद मुस्कराने लगते हैं। मैं हार मान लेता हूँ। 'जो बोले सोई हाँकर खोले' नियमानुसार हार का दण्ड एक धप्प पीठ पर। श्री नारायण सेन पारसी का अर्थ खोलने से पहले एक काव्य पद सुनाते हैं –

कारका मात अर सरसत माता/ धारापुरी की भाग्य विधाता।
राजा भोजो धार को राजो/ परजा पारक सदमत वाजो।
दोई मात की सेवा सेवे/दोई की करपा में रेवे।
कारकाजी के बलि चढ़ावे/दसेवरा पे धार लगावे।
सरसत माता घणी अकलावे/राजा भोज ने यूं हमजावे।
क्यूँ तू नत दन बलि चढ़ावे /जीव मार क्यूं पाप कमावे
अरे भोज तू हे विदवान/फेर क्यूँ होयो रे नादान/अरे भोज तू कहणो मान।
बेजुबाना का मत ले प्रान/कारका माता परचो दीयो।
राजा भोज नत मस्तक वीयो/ दसेवरा पे बलि चढ़ाजे।
दारु लाजे, धार लगाजे/ नीतर म्हारो होवे कोप।
धारा कर देऊँ अंधड़ घोप/ राजा भोज घणो घबरायो।
अरवाणे पग मंदर आयो / दसवरा पे बलि चढ़ाई।
दारु लायो धार लगाई/ मात सारदा जीत नी पाई।
कारका माता यूँ हरसाई/ सरसवतां की वैगी हार/सरसत रोवे जारोजार।

राजा भोज कालका माता और सरस्वती माता दोनों का आराधक कालका माता से पराक्रम और सरस्वती माता से ज्ञान मिलता, भोज कालका माता को बलि चढ़ाता था। धार लगाता था। सरस्वती माता के चरणों में कमल चढ़ाता था। भोज ने अनेक तालाबों का निर्माण करवाया। सब में कमल लगवाये। उसने भोजपाल नगर बसाया तब वहाँ भी विशाल तालाब बनवाया। उसके बलि प्रेम को देखकर एक दिन उसे सरस्वती माता ने परचा (स्वप्न में दर्शन) दिया। 'अरे भोज तुम इतने समझदार और विद्वान हो। धार्मिक हो फिर जीव हत्या क्यों करते हो? मेरी बात मानकर यह पाप कर्म बंद कर दो। यह बात कालका माता को बुरी लगी। कालका ने इसे अपना अपमान समझा और सरस्वती को पराजित करना तय किया। कालका ने भोज को परचा दिया कि तुम दशहरे पर मुझे बलि भेंट करो और धार लगाओ वरना मैं सारी धारा नगरी को तहस-नहस कर दूँगी। भोज धर्मसंकट में। कालका की शक्ति से तो वह परिचित था। विवश होकर उसने बलि भी चढ़ाई और धार भी लगायी। इससे कालका माता हर्षित हुई। सरस्वतीजी की हार हो गयी, इस कारण सरस्वती माता जारोजार रो उठीं।

पुस्तक चर्चा/डॉ. मंजू तिवारी

भारत वर्षीय प्राचीन चरित्र कोश

पश्चिम के इतिहासकारों ने तथा उनसे प्रभावित अनेक भारतीय इतिहासकारों ने भी भारतीय इतिहास के बारे में बहुत सारे भ्रम खड़े कर रखे हैं. भ्रम का यह वातावरण पिछले तमाम वर्षों में इतना घना और मज़बूत बना दिया गया था कि देश और दुनिया में भारतीय इतिहास की समझ केवल इतनी बना दी गई थी कि भारतीय इतिहास को केवल चंद्रगुप्त मौर्य के समय तक मान्य किया जाता था. उसके पूर्व महाभारत काल हो,या रामायण काल हो या कि वैदिक परम्परा या सम्राट विक्रमादित्य का समय हो, सब कुछ मिथ्या-इतिहास क़रार कर दिया गया था. ईसा के पूर्व पश्चिम के इतिहासकार बड़ी मुश्किल से ही मानने को तैयार थे कि ईसा के पूर्व भी भारत वर्ष में कोई जीवन था,देश की कोई सामरिक,औद्योगिक,वैज्ञानिक, साहित्यिक,ऐतिहासिक उपलब्धियां थीं. सिकंदर भारत वर्ष की सीमाओं तक आकर लौट गया था लेकिन उसे भारत विजेता सिद्ध करने के लिए, उसकी महानता को अजर अमर करने के लिए पोरस,चाणक्य, चंद्रगुप्त मौर्य जैसे चरित्रों को उन्होंने कृपा पूर्वक स्वीकार किया.

चंद्रगुप्त मौर्य के बाद के शिलालेख,ताम्रपत्र,साहित्य आदि को मान्य करने के प्रयास हुए परन्तु चंद्रगुप्त मौर्य के हज़ारों वर्ष पूर्व के समृद्ध भारतीय इतिहास को लेकर वे आँखों पर पट्टी बांधकर धृतराष्ट्र बन जाते हैं. जबकि चंद्रगुप्त मौर्य के पहले के इतिहास से जुड़ी ऐतिहासिक सामग्री वैदिक,पौराणिक, बौद्ध, जैन आदि साहित्य में प्रचुर मात्रा से मिलती है. पुरातात्विक सर्वेक्षण और उत्खनन ने हज़ारों वर्ष की मानव सभ्यता के प्रमाण भारत वर्ष में खोज दिये हैं और यह महत्वपूर्ण कार्य देश में अब भी जारी है.हमारे परंपरागत वेद, पुराण एवं बौद्ध, जैन आदि साहित्य के धार्मिक ग्रंथ केवल धार्मिक साहित्य नहीं हैं बल्कि उसमें इतिहास की भी प्रचुर उपयोगी सामग्री संचित है.

यह तथ्य अब सभी विद्वानों ने स्वीकार कर लिया है. उपरोक्त साहित्य में राजनीतिक,भौगोलिक और ऐतिहासिक ही नहीं वरन सांस्कृतिक,सामाजिक एवं आध्यात्मिक सभी प्रकार की शोध सामग्री उपलब्ध है. मैक्स मूलर, राथ, ओल्डेन बर्ग, के वैदिक साहित्य के,पार्गिटर, हाजरा आदि ने पौराणिक साहित्य के, डॉक्टर रामकृष्ण भंडारकर, डॉक्टर वासुदेवशरण अग्रवाल आदि ने पाणिनीय व्याकरण के एवं राइस डेविड्स ने बौद्ध साहित्य के संबंध में युग प्रवर्तक संशोधन पिछली शताब्दी में किये हैं और इन विद्वानों के अथक परिश्रम के कारण इन ग्रंथों का बड़ा महत्व भारतीय इतिहास की सामग्री के लिए सिद्ध हो चुका है. प्राचीन भारतीय साहित्य और पुराणेतिहास में संचित सामग्री अत्यंत महत्वपूर्ण है. उनका विश्लेषण एवं समीक्षा आधुनिक इतिहास संशोधन तर्कपूर्ण दृष्टि से किए जाने की ज़रूरत है.

इतिहास में निर्दिष्ट व्यक्तियों का सर्वांगीण अध्ययन करना इतिहास के अध्ययन का एक सबसे अधिक महत्वपूर्ण कार्य है. हमारी प्राचीन ऐतिहासिक सामग्री को आधुनिक इतिहास संशोधन की दृष्टि से विश्लेषण कर एक महत्वपूर्ण चरित्र कोश रचे जाने की अनिवार्य आवश्यकता है. इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए भारतीय चरित्र कोश मंडल,पुणे द्वारा महामहोपाध्याय विद्यानिधि डॉक्टर सिद्धेश्वर शास्त्री चित्राव के संपादन में श्रुति, स्मृति, पुराण, सूत्र, वेदांग, उपनिषद, बौद्ध, जैन साहित्य में निर्दिष्ट व्यक्तियों की साधार जानकारी प्रस्तुत करने वाले ग्रंथ को बरसों पहले मराठी में तैयार किया था जिसके हिन्दी अनुवाद के एकाधिक संस्करण अब सामने आ चुके हैं.

इस प्राचीन भारतीय चरित्र कोश में वेद,स्मृति,पुराण आदि प्राचीन भारतीय साहित्य में निर्दिष्ट व्यक्तियों के जीवन चरित्र विषयक सामग्री सप्रमाण प्रस्तुत की गई है. इस ग्रंथ में संकलित चरित्रों की संख्या लगभग 12, हज़ार से भी अधिक है

जिनमें राजा,ऋषि,रानी, ऋषि पत्नी, देवता, पितर, नाग,सर्प,यक्ष, असुर,राक्षस, गंधर्व, किन्नर,भूत,अप्सरा,राजनीतिज्ञ,सूत्रकार, धर्मशास्त्रकार,गोत्रकार, मंत्रकार आदि विभिन्न प्रकार के चरित्रों का समावेश है. व्यक्ति चरित्रों के अतिरिक्त जाति समूहों, गणराज्य और देशों की जानकारी भी संकलित की गई है. 1204 पृष्ठों के भारतीय चरित्र कोश में चंद्रगुप्त मौर्य के पहले के इतिहास को तथ्यों के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है.

सनातन परम्परा के साथ-साथ बौद्ध एवं जैन साहित्य की दुर्लभ जानकारी को भी संकलित-प्रस्तुत किया गया है. इस विशालकाय चरित्र कोश की विशेषज्ञता इस बात में है कि इसमें चरित्र और चरित्रगत प्रसंगों के समस्त संदर्भ दिए गए हैं. इस कारण से यह कोश सामान्य सृजनात्मक कोश न रहकर एक विशिष्ट प्रामाणिक कोश बन गया है.

यह चरित्र कोश सर्वकालिक है और पुरानी पीढ़ी के साथ नयी पीढ़ी के लिए आवश्यक है क्योंकि इसमें जो जानकारी समाहित की गई है, वह युवा पीढ़ी का ना केवल ज्ञानार्जन करती है बल्कि उनकी समझ को भी विकसित करती है। आज हम जिस काल और समय से गुजर रहे हैं, ऐसे ग्रंथों की हमें आवश्यकता है जो नयी पीढ़ी को ज्ञान से आलोकित कर सकें। प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति के प्रत्येक विद्यार्थी,जिज्ञासु संशोधक एवं सर्वसाधारण पाठक के लिए यह ग्रंथ अत्यंत उपादेय है.

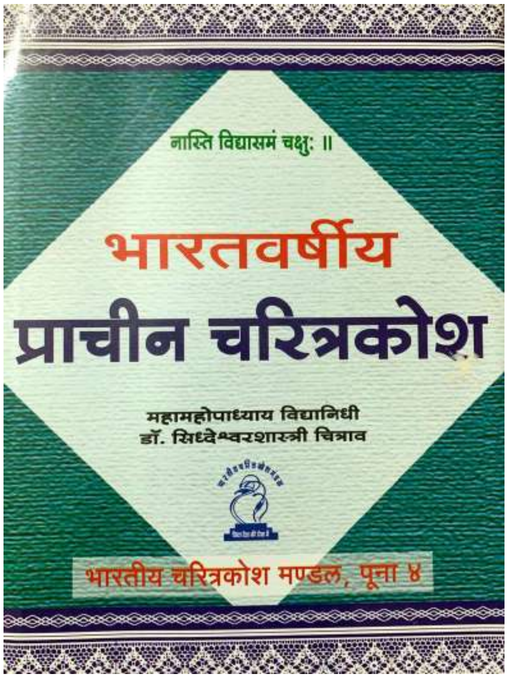

ग्रंथ : **भारत वर्षीय प्राचीन चरित्र कोश**

संपादक : महामहोपाध्याय विद्यानिधि
डॉ. सिद्धेश्वर शास्त्री चित्राव

प्रकाशक : भारतीय चरित्र कोश मंडल 1206 / 45
जंगली महाराज पथ, पुणे 411004

मूल्य : रु. 600/-

'उत्तम मन्वतर : 1 मनु-उत्तम। 2. सप्तर्षि-अनघ, ऊर्ध्वबाहु, गात्र, रज, शुक्र (शुक्ल), सवन, सुतपस। ये सब वशिष्ठ पुत्र थे एवं वाशिष्ट इनका सामान्य नाम था। पूर्वजन्म में ये सभी हिरण्यगर्भ के ऊर्ज नामक पुत्र थे। 3. देवगण-पतर्दन (भद्र, भानु, भावन, मानव) वशवर्तिन् (वेदश्रुति), शिव, सत्य, सुधामन। इन सबके बारह-बारह गण थे। 4. इंद्र-सुशांति (सुकीर्ति, सत्यजित्) 5. अवतार-सत्या का पुत्र सत्य, अथवा धर्म तथ सुनृता का पुत्र सत्यसेन। 6. पुत्र-अज, अप्रतिम, (इष, ईश) ऊर्ज, तनूज (तनर्ज, तर्ज), दिव्य (दिव्यौषधि, देवांबुज), नभ (नय), नभस्य (पवन, परश्रु, परशुचि), मधु, माधव, शुक्र, शुचि (शुति सुकेतु)'

इसी पुस्तक से

महाराजा विक्रमादित्य शोध पीठ संस्थान स्वराज संस्थान संचालनालय, संस्कृति विभाग मध्यप्रदेश शासन के लिए 1, उदयन मार्ग, उज्जैन-456010 से प्रत्येक गुरुवार को प्रसारित. सम्पादक श्रीराम तिवारी. समन्वयक मनोज कुमार.
आलेख सेवा निःशुल्क वितरण के लिए. फोन : 0734-2521499 0755-2660407
e-mail : mvspujjain@gmail.com,vikramadityashodhpeeth@gmail.com